Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 11 | NOVEMBER 2023

आधुनिकता और भारत : राजनीतिक-साहित्यिक विश्लेषण

डॉ. नवीन तिवारी [1] | डॉ. गोपीराम शर्मा [2]

[1] प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर राजस्थान.

[1] ऐसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर राजस्थान.

ABSTRACT:

अठारहवीं शताब्दी में यूरोप में ज्ञानोदय के नाम से वैचारिक आंदोलन चला, जिसने दुनिया को अमिथकीय एवं गैर रोमांटिक चिंतन से रूबरू करवाया। इस आंदोलन से निकली प्रवृतियों को आधुनिकता कहा जाने लगा। यह माना गया कि जो जितना आधुनिक है, वह उतना ही मनुष्य है। मनुष्य अपना कर्ता, उद्धारक व नियंता खुद ही बन गया। धर्म, विश्वास, आस्था, ईश्वर, भाग्य, परम्परा, संस्कृति आदि सब आधार आधुनिकता ने अमान्य कर दिये। मनुष्य अपने किये का भार अब किसी पर नहीं डाल सकता था। उसके लिए कोई मसीहा मदद हेतु नहीं आयेगा। आधुनिकता ने कहा कि हर मनुष्य को अपना क्रूस स्वयं ढोना होगा।

आधुनिकता धर्म विरोधी मानी जाती हैं परंतु भारत के संदर्भ में यह बात अलग है। यहां का धर्म विज्ञान सम्मत है। यह भारतीय मनीषा का ही कमाल था कि मानव कल्याणोचित तत्त्वों को धर्म, संस्कृति व मूल्यों का फलेवर लगाकर प्रस्तुत कर दिया जाता था। हमारे यहाँ आधुनिकता के तत्त्व वैदिक काल से दिखाई देते है पर यहां की इस आधुनिकता को आधुनिकता नहीं माना गया। क्यों कि यूरोप में धर्म विज्ञान विरोधी रहा, पुनर्जागरण-धर्मसुधार व 18वीं शताब्दी से पहले किसी सिद्धांत-दर्शन को मानव कल्याणकारी माना नहीं जा सकता। अतः ऐसे में 18वीं शताब्दी में यूरोप में उगी जनी 'आधुनिकता को ही शेष विश्व को आधुनिकता' मानने के लिए विवश होना पड़ा।

इस ज्ञान-विज्ञानाधारित व्यवस्था ने लगभग पूरे विश्व को प्रभावित किया। ज्ञान व बुद्धि के रथ पर बैठा मनुष्य प्रगति की लम्बी यात्रा तय कर गया। एक से दो शताब्दियों में ज्ञान की दुंदभी चहुंदिस सुनाई देने लगी। पर यहीं से कुछ इसके साइड इफेक्ट्स भी लक्षित हो चले। भौतिक विकास, आर्थिक समृद्धि, इहलौकिकता की तीव्र गति ने आदर्शों एवं मूल्यों की भेंट चढा दी प्रत्युत अपना भी कोई आदर्श स्थापित नहीं कर पायी। इस प्रकार आधुनिकतावादी विकास अन्तर्विरोधों का कारण बनता रहा और कृत्रिमता दिखावटीपन औपचारिकता यांत्रिकता, घुटन, संत्रास आदि प्रवृतियाँ मानस में घर करने लगी। समकालीन घबराया व निर्णय न लेने के अपराध बोध को भोगता मनुष्य आधुनिकता पर प्रश्नचिह्न लगा रहा है। फिर कह सकते हैं कि आने वाले समय में परिष्कार व संशोधन के बाद आधुनिकता मूल्य मानवता के लिए उपयोगी बने रहेंगे।

KEYWORDS:

आधुनिकता, परिवर्तनशील, रूढ़िवादिता, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी, मध्ययुगीन जीवन दर्शन, अमिथकीय, समसामयिकता, आध्यात्मिक युग, वैदिककाल, मार्टिन लूथर, मानसिक आंदोलन, भौतिकवादी दर्शन, आलोचनात्मक निर्णय, औद्यागिक क्रांति, सदाशयता, सामाजिक संरचना, सदियों पूर्व घटित, समयोपयोगी, मानव कल्याणकारी।

आधुनिकता का स्वभाव चंचलता का है। आधुनिकता का स्वरूप हर काल में बदलता रहा है। आज हम जिसे आधुनिकता बताते हैं, शायद वह कल नहीं रहेगा। इसी प्रकार जिनको अतीत में आधुनिकता की संज्ञा से निरूपित किया गया, वे सब उसी स्थिति में नहीं हैं। आधुनिकता का स्वरूप परिवर्तनशील है। आज जो चल रहा है, जिसे स्वीकार्य मान मनुष्य वहन कर रहा है, उसे पूर्णतः आधुनिकता नहीं माना जा सकता। जो विषय विगत का है, सदियों पूर्व घटित हुआ, समय बीत जाने के बाद वह आधुनिकता के दायरे में नहीं आ सकता, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता।

'आधुनिक' शब्द संस्कृत भाषा का है। यह 'अधुना' शब्द से बना है जहाँ अधुना का अर्थ "वर्तमान' होता है। सामान्य रूप से आधुनिक का अर्थ 'नूतन', 'नवीन' से भी लगाया जाता है। अधुना में इक जोड़कर आधुनिक बनाया गया है। आधुनिक शब्द के लिए अंग्रेजी में 'मॉडर्न' शब्द प्रचलित है। माॅडर्न लैटिन से आया है। लैटिन में यह शब्द मूलतः माॅडो था, जिसका अर्थ था 'जस्ट नाऊ'। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार इसका अर्थ है 'वर्तमान या हाल में घटित। लेटिन में इस शब्द का प्रयोग इस काल में (इन द टाइम) प्रचलन में रहा।

यह अलग बात है कि समय गुजरने के साथ अंग्रेजी में इस शब्द का प्रयोग कुछ अलग अर्थ में होने लगा। इसका अर्थ मूल्यों में बदलाव नयी सामाजिक संरचना और नयी सोच के पर्याय के रूप में लिया जाने लगा।

17वीं सदी में 'मॉडर्न' शब्द नये अर्थ ग्रहण करते हुए आगे बढ़ा, जिसमें अतीत का त्याग, नवीनता का आग्रह आदि संदर्भ शामिल थे। इस समय तक यूरोप में अतार्किकता, अंध-विश्वास, रूढिवादिता का बोलबाला था, लेकिन औद्यागिक क्रांति के बाद अतार्किकता, रूढ़िवादिता व अंधविश्वास का स्थान क्रमशः तर्क, मौलिकता व विज्ञान ने ले लिया।

आधुनिकता केवल समसामयिक तथ्य का नाम नहीं है। यह एक रचनात्मक स्थित है, इसका अपना दर्शन है। आधुनिकता को परिभाषित करना एक जटिल प्रक्रिया है। डॉ. नगेन्द्र ने आधुनिकता को परिभाषित करते हुए कहा- "आधुनिकता मध्ययुगीन जीवन दर्शन से भिन्न एक नया जीवन दर्शन है।"[1]

डॉ. बच्चन सिंह आधुनिकता को विज्ञानवाद से जोड़ते हुए कहते हैं- "वस्तुतः नवीन ज्ञान विज्ञान, टेक्नोलॉजी के फलस्वरूप उत्पन्न विषम मानवीय स्थितियों के नये गैर रोमांटिक और अमिथकीय साक्षात्कार का नाम आधुनिकता है।"[2]

लक्ष्मीकांत वर्मा के अनुसार, "आधुनिकता इस दृष्टि से सामाजिक दर्शन की वस्तु है, जिसमें मानव व्यक्तित्व की पूर्णता प्रतिष्ठित होती है और यह पूर्णता तभी सार्थक होती है, जब मनुष्य को स्वच्छंद रूप से आत्म निर्णय की स्वतंत्रता मिले, विवेक तथा आत्म निर्णय और विकल्प का असंतुलन ही उस नई व्यवस्था को जन्म दे सकती है, जिसमें मानव का सम्पूर्ण व्यक्तित्व मुक्ति अनुभव कर सके।"[3]

आधुनिकता किसी काल का नाम नहीं हो सकता। क्योंकि जिस काल को आधुनिक कहा जाएगा, उसमें अ-आधुनिक और आधुनिक दोनों प्रकार के लोगों की उपस्थिति सदा रहेगी। इसी कारण लक्ष्मीकांत वर्मा मूल्य बोध को ही आधुनिकता से सम्बद्ध मानते हैं- "मेरी समझ में आधुनिकता हमें मूल्यों के प्रति सचेत कराती है, किन्तु स्वयं मूल्य नहीं है। एक काल में नितांत आधुनिक भी रह सकते हैं और नितांत अ-आधुनिक भी। जिनमें मूल्यों की गतिशीलता के साथ उनको समझने और विकल्प करने की क्रियाशीलता है, वे आधुनिक हैं।"[4]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी नवीनता को आधुनिकता की विशेषता बताते हुए लिखते हैं- "आधुनिकता नवीनता काव्य में प्रतिमान रूप को स्पर्श करती है, मांजती है, खरोचती है, उसके अन्तर्निर्मित स्थिर और विकास समान धर्म की स्थिति नहीं है।"[5]

आधुनिकता को इतिहास व वर्तमान दोनों से जोड़ते हुए भ. ह. राजूरकर कहते हैं-

"आधुनिकता अपने आप में ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों का मूर्त रूप है। इस तुलना में आधुनिकता आधुनिक को पहचानने का प्रयास है। आधुनिक होने के गुण धर्मों का अलग रूप से बतलाना आधुनिकता है। आधुनिकता के साथ मूल्यगत अवधारणाएँ जुड़ी हुई हैं।"[6]

आधुनिकता समय से संबंधित होते हुए भी समय से परे है। काल से हट कर वृत्ति एवं मूल्यों से जुड़ी है। विचारकों का एक वर्ग है जो आधुनिकता को काल से जोड़कर चलते हैं। वे आधुनिकता को समसामयिकता से जोड़कर भी देखते हैं है। आधुनिकता और समसामयिकता को एक ही बताया जाता है। समसामयिक का अर्थ आज के समय से है। समसामयिकता आज के समय की वृत्तियों और विचारों के चलन के बारे में बोध कराती है। परन्तु समसामयिक काल में चलने वाले जितने विचार प्रवृत्तियाँ, दृष्टियाँ होती हैं, सब आधुनिकता बोध में नहीं आती। आज के समय में भी शाश्वत व क्षणिक मूल्यों का द्वन्द्व चलता रहता है और शाश्वत् मूल्य आगे बढ़ते हुए आधुनिकता बोध को पुष्ट करते जाते हैं तथा क्षणिक, अस्थिर, अस्थायी विचार छूटते रहते हैं।

दूसरी तरफ अतीत के कुछ विचार, सिद्धांत प्रवृत्तियों, जो समय को पार कर समसामयिक काल में आधुनिकता से जुड़कर आ जाते हैं। अतः आधुनिकता में अतीत का पूर्ण परित्याग कर दिया जाता है, ऐसा नहीं हो सकता। इसी प्रकार समसामयिकता को आधुनिकता में पूर्णरूपेण ले लिया जाता है, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता। डॉ. उर्मिला मिश्र लिखती हैं-"आधुनिक एक ऐसा शब्द है जिसका सम्बन्ध पूर्वकाल और पूर्वकालीन आलोचनात्मक निर्णय से भी होता है। आधुनिकता प्रचलित शैली और शिल्प के प्रति एक क्रांति और अन्वेषण होती हैं। यह आवश्यक नहीं है कि समसामयिक लिखा गया साहित्य आधुनिक बोध से परिपूर्ण हो।"[7]

आधुनिकता एक मिश्रित प्रत्यय है, जिसमें वर्तमान कालबोध के साथ पूर्ववर्ती युगों की जीवंत चेतन भी शामिल है। आधुनिकता एक मानसिक स्थिति है जो मूल्य का विश्लेषण करती है। समयोपयोगी मूल्य स्वीकार कर लिए जाते हैं और शेष को छोड़ दिया जाता है। इस प्रकार आधुनिकता किसी काल की नहीं, काल की गति को इंगित करती है।

भारत में आधुनिकता वैदिककाल से ही दिख जाती है। वैदिक युग भारत का भली प्रकार आधुनिक कहा जा सकता है। बौद्ध एवं जैन धर्मो की उत्पत्ति और उनके समय ने भी आधुनिकता को पोषित किया। भारत के मध्यकाल में आधुनिकता की लौ अत्यंत मंद पड़ गई थी। इसके बाद अंग्रेजी शासन दौरान यूरोपीय आधुनिकता से पुष्ट होकर यहाँ पुनः आधुनिकता का उजाला फूटा। यह काल आधुनिकता दृष्टि से विश्व के मापदंडों के अनुसार सही अर्थों में आधुनिकता का रहा।

भारतीय धर्म, संस्कृति व समाज व्यवस्था को आधुनिक विश्व समाज बहुत हल्के में लेते आया है। मध्यकाल में विदेशी आक्रमण एवं शासन को सहता भारतीय समाज लगभग 1000 वर्षों से उतनी प्रगतिशीलता के साथ आगे नहीं बढ़ पाया, जितना वह प्राचीन व आधुनिक काल में सफल रहा है। आधुनिकता का अर्थ प्रगतिशीलता है, 'मनुष्य' केन्द्र में है इसमें। भारतीय प्राचीन समाज ने विज्ञान, टेक्नोलोजी, प्रगतिशीलता के साथ मनुष्य को केन्द्र में रखकर उसके कल्याण हेतु अपनी अवधारणाएँ प्रस्तुत कीं। यूरोपीय दृष्टि से विचार करने पर पाते हैं कि ये समाज लगभग 2000 वर्षों से ही अस्तित्व में आये हैं और पुनर्जागरण काल से पहले आदिम व्यवस्था के अधीन रहे । यहाँ धर्म मनुष्य की प्रगति का बाधक रहा। इनके विश्वास, कर्मकांड एवं मान्यताएँ न केवल विज्ञान के प्रतिकूल थी, बल्कि चर्च विज्ञान विरोधी बनकर कार्य करता रहा था। सृष्टि दो हजार वर्ष पुरानी है, धरती चपटे आकार की है, सूर्य पृथ्वी का चक्कर लगाता है- जैसी विज्ञान विरोधी मान्यताओं के साथ धार्मिक दर्शन भी तर्क की कसौटियों में नहीं था। अतः यहाँ धर्म की कब्र पर ही आधुनिकता का बिरवा रोपा जा सकता था।

इसके विपरीत भारतीय धर्म पूजा, उपासना मात्र तक सीमित न था, यह कर्तव्य का बोधक था। इसकी मान्यताएँ तार्किक आधारों पर निर्मित थी। प्राचीन ज्ञान को ही समाज में प्रचार प्रसार के लिए सामान्य व्यक्ति को धर्म के पैकेज के रूप में दिया था। किसी वैज्ञानिक खोज के लिए यह धर्म खुला था, इसकी मान्यताओं में लोचशीलता थी। परम आध्यात्मिक युग में घोर भौतिकवादी दर्शन प्रस्तुत करने वाले चार्वाक को ऋषि मानकर स्वीकारा गया। मौर्य, गुप्त एवं हर्ष के काल की वैज्ञानिक उपलब्धियाँ विश्व की धरोहर हैं। सिंधु एवं इससे पूर्व की सभ्यता के लोग विश्व के साथ सम्बन्धों से जुड़े थे। हडप्पा, पूर्व हडप्पा की नगरीय एवं औद्योगिक सभ्यता आधुनिकता की सारी शर्तें पूरी करती थीं।

आज आधुनिकता जिस युग विशेष से अधिक सम्बद्ध कर विवेचित की जाती है, उस दृष्टि देखे तो भारत में आधुनिकता 1828 ई की धार्मिक जागृति से शुरू मानी जा सकती है। यह धार्मिक जागृति राजाराम मोहनराय के प्रयासों से उत्पन्न हुई। राजाराम मोहनराय ने पशु बलि, सती प्रथा जैसी प्रथाओं पर प्रहार करते हुए सामंतवादी व्यवस्था का विरोध किया। राय ने धर्म के क्षेत्र में मानवतावादी दृष्टि एवं पश्चिमी से आये नये मूल्यों को अपनाने का आग्रह किया। इनके साथ रवीन्द्रनाथ टैगोर, रानाडे, गोपाल कृष्ण गोखले एवं गाँधी जी ने धर्म के बारे में नवीन मान्यताएँ रखीं। भारत में नवजागरण की शुरुआत धर्म सुधार के रूप में हुई। राजाराम मोहनराय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की। प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसायटी आदि संस्थाओं ने सामाजिक रूढ़ियों और धार्मिक अंधविश्वासों के विरुद्ध संघर्ष किया। भारतीय इतिहास में स्वामी दयानंद का वही स्थान है जो पाश्चात्य धर्म सुधार में मार्टिन लूथर का है।

अंग्रेजों ने भारतीय संस्कृति को खराब बताने, भारतीयों को हतोत्साहित करने की नीति अपनाई। अंग्रेजों की इस नीति से भारतीयों में जो रोष व्याप्त हुआ, उसको भारतीय समाज सुधारकों ने नवजागरण में लगाया। इससे पूर्व 700-800 वर्षों तक भारतीय धर्मसंस्कृति मुस्लिम शासन की छाया में धूल धूसरित हो गई थी, उस पर सोचने को जन मानस विवश हुआ। यह ब्रिटिश शासन ने अवसर दिया कि हम अपने मध्यकालीन कुहांसे को दूर कर सके भले ही यह प्रतिक्रियास्वरूप मिला अवसर रहा। भारतीयों में आधुनिक बनने की चाह पैदा हुई। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सुधार एवं पुनर्जागरण की शक्तियों का आधार मजबूत हुआ। यही वह काल है जहाँ भारतीय आधुनिकता स्पष्ट रूप से दिखने लगी थीं।

1857 की क्रांति और इसमें हिन्दू-मुस्लिम की एकता तथा राष्ट्रीय भावना को देख अंग्रेज डर गया और यहाँ से उसने फूट डालो और राज करो की नीति पर चलना शुरू किया। बची हुई रियासतों पर कृपा कर उनको क्रांति चेतना से दूर कर दिया। इसके साथ आधुनिकतावादी भारतीय समाज सुधारकों ने केवल सुधारवादी मांगों पर बल देकर राजनैतिक मांगों व आंदोलन को धीमा कर दिया। इस प्रकार स्वतंत्रता में लगभग 100 वर्ष का समय लग गया, जबकि 1857 के बाद दूसरा प्रहार हमें जल्द ही करना चाहिए था।

भारत में आधुनिकता अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजियत के साथ आयी। हालांकि इसके लिए अंग्रेज जाति का सचेतन व ईमानदार प्रयास बिल्कुल नहीं था। यह अंग्रेजों द्वारा हीन सिद्ध किये जाने के कुत्सित प्रयासों के विरूद्ध एक प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न हुई स्थिति थी।

भारत में आधुनिकता का स्वरूप वैसा नहीं है, जैसा पाश्चात्य देशों में मिलता है। परम्परा और आधुनिकता को लेकर विद्वानों में दो वर्ग है। एक वर्ग दोनों का को अलग-अलग मानता है और दूसरा वर्ग इन दोनों को एक-दूसरे के आधार के रूप में स्वीकार करता है। यूरोपीय व अफ्रीकी देशों में परम्परा से हटकर ही आधुनिकता को स्वीकारा गया है, जबकि भारत में परम्पराएं आधुनिकता के लिए खाद-पानी का काम करती है। भारत में परम्परा सर्वथा त्याज्य नहीं है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं - "परंपरा जीवंत प्रक्रिया है जो परिवेश का संग्रह-त्याग की आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर क्रियाशील रहती है।"[8]

इसी प्रकार भारत में आधुनिकता और आधुनिकीकरण की गति कुछ शिथिल रही है। भारत का विविधतामुखी समाज है। यहाँ कई जातियाँ और वर्ग हैं, जिनकी समस्याएं आधुनिकता को बाधित करती है। विचारक मानते हैं कि भारत सन 1857 के बाद से सही रूप में समस्याओं से जुड़ा। भारतीय मानस के लिए ऐहिक सुख काम्य नहीं रहे। वह अपने परलोक के कल्याण हेतु ही सन्नद्ध रहा। भारतीय चिंतन में मनुष्य को अनुशासन में रहने, सब जीवों में एक आत्म तत्व मानने, प्रकृति को पूज्य मानने तथा 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' की त्यागपूर्ण भावना चलते यहाँ का मानस भौतिक सुख-दुःख के प्रति कभी चिंतित नहीं रहा।

यूरोपीय चिंतन की आधुनिकता में 'मनुष्य' को ही सर्वाधिक महत्त्व देते हुए उसे प्रकृति का उपभोग करने व अपने आपको भौतिक सुखों से पूर्ण कर लेने का मार्ग दिखाया। यहाँ प्रकृति मनुष्य के उपयोग के लिए है, जीव मनुष्य के भक्षण के लिए हैं और अपने आपको जिंदा रखने के लिए 'सर्वाइवल द फिटेस्ट की थ्योरी' सिद्ध है। ऐसे में यहाँ मनुष्य अपने को इहलौकिक संघर्ष में ही पाता है। इसी बात को दिनकर ने इस प्रकार कहा- "डार्विन ने मनुष्य से उसका देवत्व छीन लिया। मार्क्स ने आदमी की सदाशयता की जड़ें खोद डाली और फ्रायड ने यह सिद्ध कर दिया कि आदमी का अपने को बुद्धिवादी समझना बिल्कुल फालतू है।"[9]

भारत की आधुनिकता कुछ अलग ढंग को रही और यहाँ का जनमानस ने इतिहास के प्रारम्भिक कालों में ही पूर्ण आधुनिक की तरह सोचना- विचारना शुरू कर दिया। भारतीय

वैदिक मानस न तो भाग्यवादी था न ही धर्म के कर्मकांडों में उलझा रहा। वह मानसिक रूप से किसी व्यवस्था का दास नहीं रहा। संसार का भोग करने एवं पुरुषार्थ के साथ जीने की सोच जिस प्रकार भारतीय मानस में थी वैसी दूसरे समुदायों में कभी न रही।

इस प्रकार भारतीय आधुनिकता में समय की प्रारम्भ रेखा, परम्परा के प्रति दृष्टिकोण, अतीत से सम्बन्ध, धर्म की भूमिका, बाह्य आधुनिकीकरण की गति आदि की दृष्टि से पाश्चात्य आधुनिकता से भिन्नता मिलती है।

जिस आधुनिकता को विश्व की मान्यता मिली है और वह प्रत्यय जिस प्रकार के लक्षणों से रूढ हो रहा है, उसकी उदभावना भारत में काफी बाद में हुई। यूरोप में 18वीं शताब्दी के मध्य के काल को इस सोच के लिए निश्चित किया गया है। यह मानसिकता कुछ समय लेती हुई पश्चिमी देशों से निकलकर लगभग 100 वर्षों बाद भारत पहुंची भारतीय आधुनिकता 19वीं सदी के मध्य या उत्तरार्द्ध के लगभग उगी जमी।

CONCLUSIONS

अतः अंत में यह कह सकते हैं कि आधुनिकता भले ही एक मानसिकता का नाम है, पर यह एक कालखंड से विशेष रूप से जुड़ी है। जब हम सामान्य रूप से आधुनिक काल या आधुनिकता के बारे में कुछ कहते हैं तो इतिहास का एक काल विशेष ही सामने दृश्यमान होता है। 19वीं शताब्दी ऐसी रही है जो पूरे विश्व में आधुनिकता के लिए जानी गई है। आधुनिकता एक बहुत बड़ा मानसिक आंदोलन है, जिससे कोई भी देश व समाज प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका।

आधुनिकता के निर्विवाद महत्त्व के बाद भी आधुनिकता मनुष्य को पूर्ण रूप से सुखी बनाने का संकल्प पूरा न कर सकी। आधुनिकता ने मनुष्य को धर्म, परम्परा व इतिहास से काटकर सुख की दौड़ में लगा दिया, पर आधुनिकीकरण के बाह्य साजो सामान के ढेर पर बैठा मनुष्य आज खाली-सा है। उसके अन्दर के आनन्द का सोता सूख गया है। आधुनिकता ने संकल्प विकल्प और निर्णय-अनिर्णय के तमाम अन्य तार तोड़कर केवल मानव के मस्तिष्क को ही एक मात्र सही एवं उचित अधिष्ठता बना दिया। आज मनुष्य का मस्तिष्क पूरी दुनिया के बारे में फैसलों का एक्स्ट्रा लॉड लिए घूम रहा है, इसलिए बाह्य तमाम रंगीनियों एवं सुख के साजो सामान के साथ मनुष्य का अन्तस् रिक्त व मस्तिष्क तनाव से ग्रस्त है। समकालीन घबराया व निर्णय न लेने के अपराध बोध को भोगता मनुष्य आधुनिकता पर प्रश्नचिह्न लगा रहा है।

आधुनिकता को प्रश्नांकित किया जा सकता है, संदेह के पूरे अवसर उसने दिये हैं। इसके बावजूद यह कहने में कोई गुरेज नहीं होना चाहिए कि इसने 150-200 वर्षों तक पूरे विश्व को नयी दिशा दी। इसकी क्षमताओं पर उग आये संदेह के बादलों के पूर्णतः बरस जाने के बाद भी आधुनिकता के शाश्वत मूल्य बच्चे रहेंगे और आने वाले समय में परिष्कार व संशोधन के बाद उसके मूल्य मानवता के लिए उपयोगी बने रहेंगे।

REFERENCES

1. डॉ. नगेंद्र- एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, 1-19वीं सदी, पृष्ठ 1086
2. डॉ बच्चन सिंह-आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद,1986,पृष्ठ 37
3. लक्ष्मीकांत वर्मा - नये प्रतिमान पुराने निकष, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 24
4. वही, पृष्ठ 23
5. डॉ. एन. डी. पाटील - आधुनिक खंडकाव्य में युग चेतना, विनय प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ 27
6. भ. ह. राजूरकर - आधुनिक साहित्य और अनुसंधान, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ 07
7. डॉ उर्मिला मिश्र - आधुनिकता और मोहन राकेश, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1979,पृष्ठ 07
8. हजारी प्रसाद द्विवेदी- 'परंपरा और आधुनिकता' निबंध से उद्धृत
9. रामधारी सिंह दिनकर -आधुनिकता बोध, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1980, पृष्ठ 09